कहानी

रंग जो लौट आए!

तनुजा चौबे

मनोहर और सावित्री अक्सर सोचते— गलती उनकी ही थी, जो अपना पुराना मोहल्ला, शहर और परिचित वातावरण छोड़कर बेटे के साथ दूसरे शहर आ बसे परिस्थिति ऐसी बन गई थी.जब से पुराना मोहल्ला छूटा, त्योहारों का उत्साह भी जैसे छूट गया. होली पर बस मन ही मन रंगों को महसूस कर रह जाते.

शाम को घर में अक्सर मनोहर और सावित्री ही अकेले होते. बहू-बेटा ऑफिस में और बच्चे एक्टिविटी क्लास में व्यस्त रहते. एक दिन चाय पीते हुए मनोहर बोले,

होली आ रही है, थोड़ी गुजिया या लड्डू बन सकते हैं?

सरिता ने साफ़ मना कर दिया. वह बहुत हेल्थ-कॉन्शियस थी, डाइट फॉलो करती थी और अजय को भी करवाती थी. बच्चों को भी इन चीज़ों में रुचि नहीं थी.

फिजूल की मिठाइयाँ बनेंगी तो कौन खाएगा? उसने कहा.

मनोहर चुपचाप चाय पीकर टहलने निकल गए.

पार्क में बच्चे होली की बातें कर रहे थे—कैसे होलिका दहन करेंगे, कैसे रंग खेलेंगे. मनोहर का मन अतीत के रंगों में खो गया.

उनके पुराने मोहल्ले में होली कुछ और ही होती थी. होलिका दहन से पहले ही तैयारियाँ शुरू हो जातीं. शाम को स्त्री-पुरुष और बच्चों की टोली इकट्ठी होकर रूपरेखा बनाती—कैसे मनाएँगे, क्या व्यवस्था होगी. हर आँगन में गोबर के बने बड़कुले सूखते रहते. रंग-बिरंगी झाड़ियों से चौक सजता.

चंदा इकट्ठा करने का काम मनोहर और उनके खास दोस्त जाकिर के जिम्मे रहता. बाकी व्यवस्थाएँ मोहल्ले वाले मिलकर करते. हर साल की तरह वे दोनों शाम को काम से लौटकर चंदा माँगने निकलते. सभी घरों से खुशी-खुशी सहयोग मिलता. होली के दिन ठंडाई, भांग और नाश्ते की व्यवस्था होती. पूरा मोहल्ला एक परिवार की तरह रहता.

लेकिन एक साल होली के कुछ दिन पहले शहर का माहौल अचानक बिगड़ गया. दंगाइयों ने दंगे भड़का दिए. कर्फ्यू लग गया. लोग घरों में कैद हो गए. मोहल्ले में हिंदू परिवार अधिक थे, पर सब मिलकर जाकिर भाई के परिवार की सुरक्षा का ध्यान रख रहे थे.

कर्फ्यू में दो घंटे की छूट मिली. तभी मनोहर ने देखा—जाकिर का परिवार ऑटो में सामान के साथ बैठ रहा है. वे दौड़कर पहुँचे.

कहाँ जा रहे हो?

जाकिर ने भारी स्वर में कहा, जहाँ हमारी कम्युनिटी के लोग हैं, वहीं जा रहे हैं. सरकारी सुरक्षा में दूसरे शहर शिफ्ट हो रहे हैं.

मनोहर ने बहुत समझाया, पर जाकिर ने मन बना लिया था. तभी सावित्री गुजिया और लड्डू का डिब्बा लेकर आईं और जाकिर की पत्नी के हाथ में देते हुए बोली, अपना ध्यान रखना.

ऑटो चला गया. तभी मनोहर को याद आया— होली का अच्छा-खासा फंड भी जाकिर के पास था.

स्थिति सामान्य हुई, पर उस साल होली नहीं मनाई गई. फंड का पैसा जस का तस बचा रहा. जब मोहल्ले वालों ने पैसे के बारे में पूछा, तो मनोहर ने सच बता दिया कि पैसा जाकिर के साथ चला गया. कुछ लोगों ने मान लिया, कुछ ने शंका जताई. कुछ को लगा—जाकिर के जाने का फायदा उठाकर मनोहर ने पैसा हड़प लिया है.

मनोहर ने सफाई दी, पर कुछ लोगों की दृष्टि बदल गई. व्यवहार रूखा हो गया. जो लोग पहले से उनकी और जाकिर की दोस्ती से ईर्ष्या रखते थे, उन्होंने बात को और हवा दे दी. मोहल्ले की एकता टूट गई. अगले साल उन्हें कमेटी में शामिल भी नहीं किया गया. मनोहर स्वयं को अपमानित महसूस करने लगे.

होली की रात अजय बाहर खाट डालकर सोया था. कुछ लड़के उसकी खाट को होलिका के पास खींच ले गए. वह घबरा गया. वे वही बच्चे थे जिनके घरों में मनोहर के प्रति शंका थी. अजय डर गया. अब मोहल्ले के बच्चे भी उससे पहले जैसा व्यवहार नहीं करते थे.

इस घटना के बाद मनोहर के मन में कटुता आ गई. कुछ समय बाद उन्होंने मकान बेच दिया और दूसरे शहर आ गए. सब पीछे छूट गया—बस यादें रह गईं.

पार्क से लौटकर एक दिन मनोहर टीवी पर लोकल न्यूज़ देख रहे थे. होली की तैयारियों की खबरें चल रही थीं. मिठाई, नमकीन और ड्राई फ्रूट्स की दुकानों के दृश्य दिखाए जा रहे थे. तभी एक ड्राई फ्रूट्स की दुकान का नाम देखकर उन्हें जाकिर की याद आई.

जाकिर अक्सर दुबई जाकर ड्राई फ्रूट्स का व्यवसाय करने की बात करता था. मनोहर ने दुकान का नंबर नोट कर लिया.

अगले दिन बहू-बेटे के ऑफिस जाने के बाद मनोहर और सावित्री वहाँ पहुँचे. दुकान पर अजय की उम्र का एक युवक बैठा था. मनोहर ने मोहल्ले का नाम लेकर पूछा,

क्या यह जाकिर की दुकान है?

जी हाँ, और मैं उनका बेटा मकसूद हूँ.

मनोहर ठिठक गए.

मकसूद की आँख भर आई.

वह काउंटर से निकलकर आया, उनके हाथ पकड़कर बोला, अब्बा नहीं रहे आपको सब बताता हूँ.

उसने बताया—रेलवे स्टेशन पर फिर हमला हुआ. जाकिर के सिर पर चोट लगी. जेब में चंदे के पैसे थे. उन्होंने अम्मी को दिए और कहा—ये चंदे के पैसे मनोहर को लौटा देना.

कुछ समय बाद उनका इंतकाल हो गया. अम्मी ने आखिरी वक्त तक अमानत सँभालकर रखी.

मैं कई बार पुराने मोहल्ले में आपको खोजने गया, पर वहाँ किसी को भी यह नहीं पता था कि आप कहाँ चले गए.

मैं आपकी अमानत कल आपके घर आकर देता हूँ, आप घर का पता बता जाइए, उसने कहा.

मनोहर ने पता लिखाया

मनोहर बोले, नहीं, तुम कल घर मत आना होली है. मैं कुछ दिन बाद आकर मिलूँगा. और अब उन पैसों की चिंता भी मत करो जाकिर नहीं रहा अब उन पैसों का जाकिर पर कोई उधार नहीं रहा.

जाकिर की मृत्यु का बोझ लेकर मनोहर लौट आए. अब सारी पुरानी बातें अर्थहीन लग रही थीं. जिस पॉश कॉलोनी में वे रहते थे, वहाँ होली के कोई मायने ही नहीं थे.

दूसरे दिन होली थी. सरिता ने हिदायत दे रखी थी— कोई भी दरवाज़ा बजाए, मत खोलना.

तभी घंटी बजी.

मैं मकसूद हूँ, बाहर से आवाज़ आई.

मनोहर धीरे से बोले जाकिर का बेटा

बीते दोनों की छाया अजय के चेहरे पर साफ नजर आ रही थी

इस बार मनोहर स्वयं आगे बढ़े और दरवाज़ा खोल दिया.

मकसूद ने अंदर आते ही गुलाल निकाली और अजय व मनोहर को लगा दी. फिर थैले से डिब्बा निकालकर बोला,

अम्मी ने आपके लिए गुजिया और लड्डू भेजे हैं.

मनोहर की आँखें छलक पड़ीं. उन्होंने बिना किसी हिचक के मकसूद को गले लगा लिया और उसके माथे पर गुलाल लगा दी.

घर के दरवाज़े पर वर्षों से सूनी पड़ी होली जीवित हो उठी. बीस साल की गलतफहमियाँ रंगों में धुल गईं.

सारी दूरी, सारे संदेह—गुलाल की एक मुट्ठी में खो गए. रंग सचमुच लौट आए थे.

क्लास by बड़े भाई

ऐसी प्रतिज्ञाएं तोड़ देना उचित है

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

जब भी हम प्रतिज्ञा की बात करते हैं तो सहज ही मन में महाभारत की कथा याद आती है. यदि आप देखें पढ़ें तो आप पाएंगे बहुत से चरित्र किसी संकल्प और प्रतिज्ञा के साथ बंधे हुए हैं. एक चरित्र ने आँख पर पट्टी बांधकर अपना प्रण पूरा कर रही हैं. यज्ञसैनी को दुशासन के लहू से ही केश धोना था और गंगापुत्र देवव्रत, जिन्हें उनकी प्रतिज्ञा के लिए ही पहचाना जाता है जो कठिन प्रतिज्ञा लेने के बाद भीष्म कहलाये.

आज इस विषय पर चर्चा का उद्देश्य अतीत की इन प्रतिज्ञाओं से, इनके परिणामों से अपने वर्तमान और भविष्य के लिए कोई सार्थक सन्देश निकालने का है क्योंकि अतीत सदैव सीखने का विषय रहा है. तो हमारा मंथन इसमें से सीखने पर केन्द्रित है, जो हमें कोई मार्ग दिखाए.

छोटे भाई, जीवन में हम भी बहुत से संकल्प लेते हैं, कोई वादा करते हैं या कोई व्रत पालते हैं. यह बहुत ही कठिन कार्य है यह हर किसी के बस की बात भी नही. यह हमारे संयम का परिचायक भी है. अब बात यह है कि क्या प्रतिज्ञा यदि कभी हम तोड़ दें क्या हमारा अपयश हो जायेगा, क्या दुनिया हम पर हँसेगी, क्या लोग हम पर व्यंग्य कसेंगे.. जी, यह सब हो सकता है लेकिन याद रखिये कई बार कुछ प्रण त्याग देना उचित होता है, अपने यश अपयश पर बिना विचार किये और यह तब जब इससे किसी और का बड़ा नुकसान हो रहा हो. अब यदि विचार करें तो पितामह की प्रतिज्ञा, कुरुवंश पर कितने ही कलंक थोपकर चला गया, वधु का आँखों के सामने वह अपमान कौन भूल सकता है. प्रतिज्ञावश ही अन्याय के पक्ष से युद्ध करना पड़ा.खैर यह तो सहज बात की.

छोटे भाई, आप हम आज के समय के हिसाब से जो सीख सकते हैं वो यह है कि कोई संकल्प, कोई प्रण पहले तो विचार करके लें, किसी महान उद्देश्य को पूरा करने के लिए लें, उसका पालन करें लेकिन जब लगे कि इस प्रण से आपके अलावा बहुतों को नुकसान हो रहा है और वह नुकसान अनुचित है तो उसे मेरे हिसाब से उस प्रण से पीछे हो जाना उचित हैं..

हम कुछ वादे करते हैं जिन्हें निभाने का प्रण लेते हैं, अच्छी बात है लेकिन ध्यान रखिये आपके प्रण का दुरूपयोग न होने पाए. यह भी सुनिश्चित करिये. इसके होने और न होने से होने वाली क्षतियों का आंकलन भी करिये. आप कोई वादा निभाने की पीड़ा सहें लेकिन जब यह आपकी कमजोरी बनकर किसी गलत को मजबूत करने लगे तो ऐसे वादे से पीछे होने पर एक क्षण भी विचार न करियेगा. कोई भी वादा किसी गलत काम का मोहरा बने यह कभी उचित नही है और यहाँ आपको अपने प्रण पर आपकी अडिगता दिखाने की भी कोई आवश्यकता नही है. जो आपका निर्णय स्झंगे वो सदैव आपका सम्मान करेंगे. धन्यवाद.

पुस्तक चर्चा

संवेदना से भीगी कहानियों की खिड़की से झांकता समाज

डॉ. अखिलेश पालरिया

रेणु गुप्ता की कहानियाँ पाठक को संवेदना के उस तल तक ले जाती हैं, जहाँ से हमें आज के समाज की कुरूपता और उसकी विडम्बनाएँ झाँकती नज़र आती है. संवेदना से भीगी इन कहानियों को पढ़ते हुए पाठक भी इनसे जुड़ जाता है.

नए कहानी संग्रह कैसी पहेली ज़िंदगानी की पहली कहानी जीवन संघर्ष एक ऐसे शख्स की कथा है जो पुलिस महकमे में सरकारी वकील है, जहाँ ईमानदारी को अचरज की दृष्टि से देखा जाता है. इसी ईमानदारी के साथ कहानी का नायक सतत संघर्ष करता है. रेणु जी ने कहानी को यथार्थ तक सीमित न रख कर इसे विस्तार दिया ताकि लोगों का ईमानदारी के प्रति नकारात्मक नज़रिया बदले.

तर्पण एक यथार्थपरक, सशक्त कहानी है जिसे एक बार हाथ में लेने के बाद पाठक समाप्त करके ही रख पाता है. अन्य कहानियों से इतर इसमें संवादों की अधिकता है, जो कथानक को सरस, हृदयस्पर्शी व गतिशील बनाते हैं. सास के देहांत के उपरांत बहू द्वारा वृद्ध, लाचार ससुर की अवहेलना एक संवेदनशील विषय है, इसी पृष्ठभूमि में दो कहानियाँ हैं; जीवन संध्या एवं सुकून. ये दोनों कहानियाँ सुखांत हैं, जिनके जरिए लेखिका ने नई फसल को सुधरने का संदेश दिया है.

पति द्वारा पत्नी को अपनी संतानों का त्याग कर दूसरा विवाह करने का विषय आज भी प्रासंगिक है जिस पर तीन कहानियाँ; प्रायश्चित तुम न जाने कहाँ खो गए% तथा दरका आईना हैं. ये तीनों कहानियाँ वर्तमान समाज में पति पर निर्भर महिला की दशा को रेखांकित करती हैं. कहानी जिंदगी अपनी शर्तों पर% जैसा कि शीर्षक से ही स्पष्ट है; सुशिक्षित, कामकाजी, आज के युग की नारी बच्चों व पति को छोड़कर विवाह के बीस वर्षों बाद भी पति से तलाक लेकर जिंदगी अपने ढंग से जीना चाहती है. एक मुद्दत बाद उन स्वार्थी भाइयों की दास्ताँ है जिन्हें न तो बहन के विवाह की फ़िक्र है और न अपने वयोवृद्ध पिता की. आखिर में बहन, भाइयों के विरुद्ध फैसला लेने में तनिक भी संकोच नहीं करती.

कहानी एक बार फिर भी बेमेल विवाह की है लेकिन यहाँ पत्नी, पति से अलग हो कर अपने गुणों के अनुरूप व्यक्ति का चयन पुनर्विवाह के लिए करती है. गरीबी में आटा गीला कहावत की बानगी प्रस्तुत करती कहानी तीन जोड़ी भूखी आँखें में लेखिका ने एक फटेहाल घर की तंगहाल स्थिति का यथार्थ चित्रण कर करुणा रस में पगी कथा रच कर इस वंचित वर्ग की विषम स्थिति का आकलन किया है. संग्रह की धूप-छाँव तथा तेरी यादों के साये तले फ़ौजियों की ज़िंदगी पर रची गई मार्मिक कहानियाँ हैं जो फौजियों की पत्नियों से संबंधित दर्दनाक पक्षों की बारीकी से पड़ताल करती हैं. कहानी बोलते पत्थर में तीसरी बेटी के जन्म पर दादी द्वारा माँ को दी जा रही अशोभनीय गालियाँ बड़ी बेटी 7 वर्षीया चिरमी को मन ही मन प्रेरणा देती हैं कि वह बड़ी होकर ऐसे लक्ष्य अर्जित करेगी कि दादी और दुनिया को लड़कियों का वर्चस्व स्वीकार करने को विवश कर देगी.

शिल्प, कथ्य, संवाद, कथानक और पात्रों व परिवेश के चित्रण, सभी स्तर पर अपनी उच्च स्तरीय लेखन क्षमता के दम पर संग्रह की कहानियाँ पाठकों के मानस पर पूरे दम-खम के साथ दस्तक देने में समर्थ हैं. सभी कहानियों में संवेदना का तत्व अपने प्रबल स्वरूप में प्रकट हुआ है, अतत्वे मन को छूती हैं. अधिकांश कहानियाँ वर्णनात्मक होने के बावजूद कथानक के स्तर पर सुदृढ़ है. भाषा पर सहज अधिकार लेखक की कलम की खासियत है. भाषा शैली में शिल्प सौन्दर्य सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है. सभी कहानियाँ केन्द्र में मानवीय रिश्ते रखते हुए बुनी गई हैं; कहीं रिश्तों का अपनापन है तो कहीं उनमें टूटन. पात्रों का चरित्र चित्रण बेहद सशक्त ढंग से किया गया है, अत: कहानियों के संवाद प्रधान न होने के बावजूद वह कथानक को उबाऊ नहीं होने देता.

अधिकांश कहानियाँ वास्तविकता पर आधारित हैं, उनमें आदर्श को कृत्रिम रूप से थोपा नहीं गया है. ये कहानियाँ पाठक द्वारा पढ़ना आरम्भ करने पर अंत तक पढ़ी जाने का माद्दा रखती हैं. रेणु जी कुशल लेखिका कही जा सकती हैं. संग्रह की कहानियाँ भी इसे प्रमाणित करती हैं.

कैसी पहेली ज़िंदगानी (कहानी संग्रह)
रेणु गुप्ता
मूल्य-370 रुपये
बोधरस प्रकाशन, लखनऊ

कविता

सात रंग, सनातन होली

अजय मिश्रा

प्रमाण प्रह्लाद, था सर्वस्व साथ ,
खाक विषममति होही ,

भारत जन ,संग सत्व ,
जलमरो ,विरोधी कोही ,

नहीं सफल , सकल षड्यंत्र ,
भारत विरोधी ,

सात्विक चैतन्य जाग ,
हैं , सारे जन-मन मे ,
होगा तेरा ही दाह ,
बच न सकेंगे, देशद्रोही,

परव परव , घुट-घुट मरो ,
परख ली, तेरी चाल ,
सकल जग , हम हैं समर्थ ,
तेरा निश्चित हैं नाश ,
कुमार्ग के बटोही,

राम कृष्ण चरित, सिन्धू ,
सनातनजन ,अंकभर ,
गाते सब ,मधुर राग होली ,

कथाएं

अंतिम प्रहर की रसोई

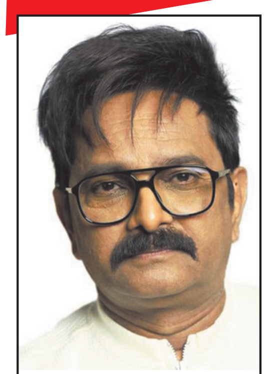

श्रीकुमार दत्त

पत्नी तसलीमा के इलाज के लिए मैनुल बांग्लादेश से चेन्नई के अपोलो अस्पताल आया था. कई तरह की जाँचों के बाद डॉक्टरों ने बताया कि गर्भाशय की सर्जरी ज़रूरी है और जितनी जल्दी हो उतना बेहतर. लगभग दस दिनों में मरीज़ ठीक होकर घर लौट सकेगी. मैनुल कोई जोखिम नहीं लेना चाहता था इसलिए सर्जरी की सारी औपचारिकताएँ पूरी कर दीं. चूँकि कुछ दिन रुकना था, होटल महँगा पड़ता. उसने अस्पताल के पास नुंगमबक्कम इलाके में सारी सुविधाओं से लैस एक सिंगल बीएचके सर्विस्ड अपार्टमेंट पंद्रह दिनों के लिए किराए पर ले लिया. वहाँ घरेलू सामान उपलब्ध था, खुद खाना भी बना सकता था. तय दिन तसलीमा को अस्पताल में भर्ती कराया गया. सर्जरी सफ़ल रही, दोनों के मन से जैसे कोई भारी बोझ उतर गया. वे दिन गिनने लगे कि दस दिनों में घर लौट जाएँगे.

लेकिन राहत के बीच एक अजीब.सा असहज शोर मन में सुई की तरह चुभने लगा प्रेशर कुकर की सीटी. पहली रात किसी ने ध्यान नहीं दिया. दूसरी रात भी नहीं. तीसरी रात जब आवाज़ साफ और बहुत पास से आई तो दोनों चौंक पड़े. गहरी रात में कौन खाना बनाता है. कमज़ोर तसलीमा ने करवट बदली सुन रहे हो मैनुल बोला-शायद पड़ोस के फ्लैट से. अपनी बात पर उसे खुद भरोसा नहीं हुआ. अगली रात ढाई बजे मैनुल की नींद खुली. उसे प्यास लगी . पानी पीने उठा तो फ़िर वही सीटी. आवाज़ जैसे इस अपार्टमेंट से नहीं और नीचे और बाहर से आ रही थी. वह बालकनी में गया. चेन्नई की रात की हवा भारी और गरम थी. सामने सड़क के उस पार एक अजीब दृश्य दिखा दो ऊँची इमारतों के बीच उपेक्षा में पड़ा एक मंज़िला घर से आ रही थी सीटी . घने अँधेरे में डूबे उस घर के एक कमरे की धूल-जमी खिड़की के भीतर रोशनी थी. काँच के पीछे एक महिला धुँधली परछाईं.सी. मानो जैसे वह गैस चूल्हे पर कुछ खाना पका रही है. कंधों की हलचल, हाथों की गति साफ़ दिखती थी, पर चेहरा नहीं. मैनुल के सीने में अजीब मरोड़ उठा. यह घर तो दिन भर ताला बंद रहता है. चारों ओर खरपतवारों से भरा हुआ, गेट के ताले पर ज़ंग. दिन में कोई आता-जाता नहीं दिखता. मामला रहस्यमय था. और एक बात ने उसे और उलझा दिया, गली के कुत्ते भौंकते हुए जैसे किसी का पीछा करते हुए उस घर के दरवाज़े तक आते फ़िर अचानक भय से काँपते हुए कूँकत-चीखते पूँछ दबाकर भाग जाते. यहाँ कौन रहता है. सिर्फ़ एक कमरे में ही रोशनी क्यों ? सवालों का जवाब कहाँ. अपार्टमेंट में सब अनजान थे, कोई स्थायी नहीं. भाषा भी समस्या थी. उस रात वह ज्यादा देर बालकनी में नहीं रुका. जैसे ही नज़र हटाता परछाईं हिलती महसूस होती. डर के मारे भीतर आकर दरवाज़ा बंद कर लिया.

अगली सुबह वह घर पहले की ही तरह उजाड़ और परित्यक्त पड़ा था. पिछली रात की गतिविधियों का कोई भी चिह्न वहाँ शेष नहीं था. पूरे दिन अस्पताल की भागदौड़ में भी वह दृश्य मन में घूमता रहा. तसलीमा से कुछ नहीं कहा, वह पहले ही कमज़ोर थी. पर जिज्ञासा थमी नहीं. अगली तीन रातें ठीक उसी समय वह बालकनी गया, जैसे कोई अनजाना आकर्षण खींच रहा हो. दो रात कुछ नहीं दिखा. तीसरी रात फ़िर रोशनी जली, वही महिलाए वही अंदाज़. कितना समय बीता पता नहीं तभी पास की किसी मस्जिद से फ़ज्र की अज़ान सुनाई दी. रोशनी बुझ गई. खिड़की अँधेरी. और नाक में जले मांस की गंध आई. आख़िरकार वह पास की बंगाली होटल पर गया. मालिक मध्यम उम्र का था, तमिल धाराप्रवाह पर बंगाली में कोलकाता की खनक. मैनुल बहुत कम समय में ही उससे दोस्ती कर ली थी. जब मैनुल ने इस घटना का वर्णन किया मालिक का चेहरा पीला पड़ गया. घर उसने फुसफुसाया पक्क मैनुल ने सिर हिलाया. वह बोलाए एक साल से वीरान है. डेढ़ साल पहले एक नवविवाहित जोड़ा रहता था. लड़का सॉफ्टवेयर इंजीनियर. सुना था वह सुबह जल्दी निकल जाता इसलिए लड़की भोर में खाना बनाती थी. मैनुल की रीढ़ में ठंड दौड़ गई. एक सुबह आवाज़ और धीमी हुई लड़की रसोई में जली हुई हालत में मिली. पति फ़रार था, बाद में पकड़ा गया. तब से कोई नहीं रहा.

उस रात तसलीमा को बुख़ार आ गया. घर जाने के लिए दो दिन बाकी थे. मैनुल सारी रात जागता रहा. लगभग तीन बजे फ़िर सीटी. इस बार वह बालकनी नहीं गया. आँखें बंद कर बिस्तर पर बैठा रहा. तभी दरवाज़े के बाहर हल्की सरसराहट . जैसे कोई कॉरिडोर में चल रहा हो. दरवाज़े की दरार से सांभर के तड़के की खुशबू आई. सब तो सो रहे हैं ! काँपते हाथों से उसने दरवाज़ा खोला . कुछ नहीं. कॉरिडोर खाली, रोशनी जल रही थी. पर गंध और तेज़. वह बालकनी में गया. इस बार काँच के पीछे परछाईं

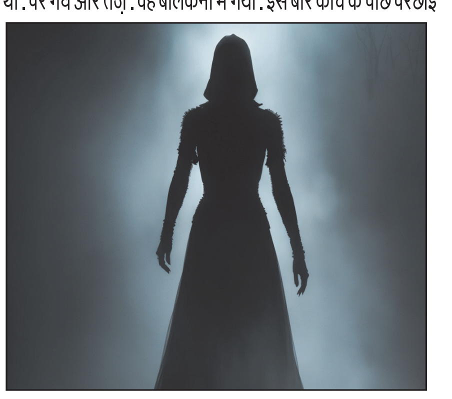

नहीं एक महिला साफ़दिखी. लाल साड़ी, खुले बाल. चूल्हे के सामने खड़ी उसने सिर घुमाया. आँखें नहीं, चेहरे की जगह अँधेरा, खोखला. मैनुल चीखना चाहता था, पर आवाज़ नहीं निकली. तभी फ़ज्र की अज़ान शुरू हुई. रोशनी बुझ गई. सब अँधेरा . अगली सुबह ही उसने अपार्टमेंट छोड़ने का फ़ैसला किया. तसलीमा कुछ समझ नहीं पाई, बस मैनुल की आँखों के नीचे गहरी काली छायाएँ देखीं. एयरपोर्ट जाते समय मैनुल पीछे देखा . नुंगमबक्कम की सड़क दूर होती गई. अचानक लगा उस दूर की खिड़की से कोई हाथ हिला रहा है . प्रेशर कुकर की सीटी जैसा ख़ामोशी के भीतर एक अजीब निरंतर बुलावा.

परंपरा

नील मणि

होली से एक दिन पहले पोती बड़ी उत्साहित थी. उसने बाल्टी पिचकारी और बड़े टब तैयार कर लिए.

दादी चुपचाप देख रही थीं.

सुबह पोती पिचकारी भरकर आँगन में पानी उड़ाने लगी.

बेटा जल जीवन है. दादी ने प्यार से क्यारी की सूखी मिट्टी दिखाकर कहा —

जहाँ पानी की कमी होती है वहाँ पौधों के साथ साथ त्यौहार भी फीके हो जाते हैं. कुछ जगहों पर तो लोग टैंकर से पानी खरीदते हैं. गांवों आदि में तो महिलाओं को घड़ों में दूर से पानी लाना पड़ता हैज अगर त्यौहार के बहाने हर घर इतना पानी बहाए तो क्या होगा?

पोती की आँखें गोल गोल हो गईं. वादा करो पिंकी कभी पानी नहीं बहाओगी. पिंकी ने कुछ सोचते समझते सिर हिलाया.

दादी रसोई से सूखे गुलाल और फूलों की पंखुड़ियाँ लाईं. उन्होंने समझाया —हमारी पुरानी होली में फूल अबीर और मिलन ज्यादा था पानी कम.

पोती मुस्कुराई. उसने पिचकारी एक तरफ रख दी. दोनों ने फूलों और सूखे रंग से होली खेली. आने जाने वालों का भी दादी पोती मां पापा ने गुलाल और फूलों की पंखुड़ियाँ से स्वागत किया.

माँ रसोई में गुजिया तल रही थीं. आँगन में रंग उड़ रहे थे— पर पानी नहीं बह रहा था.

पोती बोली — दादी अब हमारी होली भी खुश और धरती भी खुश ! दादी ने उसे गले लगा लिया.

संपादकीय बोर्ड प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी